
Himadri Vaibhavam Haimakunda

हिमाद्रिवैभवम्हैमकुण्ड

Document Information

Text title : Himadri Vaibhavam Haimakunda and Pushpadhati

File name : himAdrivaibhavamhaimakuNDa.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 31, 2020

sanskritdocuments.org

हिमाद्रिवैभवम्हैमकुण्ड



(हैमकुण्ड पुष्पधाटी च)

(गीतिका) (मात्रासमक जाति)

जय जय जय हे हैम-सुकुण्डम् ।

सिक्ख-धर्म-सपूजित-रत्नम् ।

गुरु-गोविन्द-तपस्या-भूमिः

लक्ष्मण-मन्दिर-शोभित-भूमिः ॥ जय० ॥

हैमकुण्डमिदमद्भुत-मूर्तिः

हिम-गिरि-शोभित-हिममय-मूर्तिः ।

हिमाच्छादित हिममय-वारि

हैम-प्रपात पात-द्वय-रम्यम् ॥ जय० ॥

घाघरियातं कठिने मार्गे,

स्थितः सदा हैमावृत एव ।

सतत हिमानी सुषमा-हृद्यः

गुरुद्वाराऽऽश्रित-गौरव-कीर्तिः ॥ जय० ॥

मार्गे तत्र सोपान-सहस्रं

कठिनं क्लिष्टं सतत-सदुर्गम् ।

आरुह्यैतदजलमुदारं

कुण्डं प्राप्य शान्ति-सुखमेति ॥ जय० ॥

गुरु गोविन्दसिंह-यति-र्वयः

तीव्रं तस्त्वा तपसा राशिम् ।

श्लेच्छ-त्रास-जनतापं हर्तुं

भुवमापेदे भव-भय-हर्ता ॥ जय० ॥

सिक्ख धर्म शुभ तीर्थमुदारं

शौर्य-शक्ति-सञ्चार मनोज्ञम् ।

गुरुद्वारा-दर्शित निजभक्तिः
सिक्ख-जनाः श्रयते त्वविरामम् ॥ जय० ॥

पावनतीर्थं प्रतिपल रम्यं
शान्ति-सद्म चिर-चिन्तन धामम् ।
जगति तनोतु शान्तिमविरामं
आत्मिक-शक्तिं वितरतु लोके ॥ जय० ॥

हैमकुण्ड ! तव कीर्तिरुदारा
लोके शान्तिः श्रियं वितनोतु ।
विश्वशान्ति-सन्देशमुदार्यं
भ्रातृभाव समता प्रथयैच्च ॥ जय० ॥

पुष्प-द्रोणि-रियमक्षयकीर्तिः,
गन्धमादनाद्रि सुविव्यातः ।
कठिन हिमानी-पार व्याप्ता
क्रोशद्वय सुम शोभा-राशिः ॥ जय० ॥

नैसर्गिक-सुमनोभिरभिरव्या
लभते मासत्रयं सुषमाढया ।
पुष्पद्रोणि हृत्वा खेदं
कोमलभावं तनुयाच्चित्ते ॥ जय० ॥

Proofread by Mandar Mali

Himadri Vaibhavam Haimakunda

pdf was typeset on May 31, 2020

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

